Hindi 2023 Chap

# सूफ़ी और क़व्वाली परंपरा

संपादक

डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

डॉ. उषा आलोक दुबे

आर. के. पब्लिकेशन

मुम्बई

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

ISBN : 978-93-91458-01-0

Copyright © Reserved

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : ₹ 550/-

| शीर्षक | Title |
|---|---|
| क़व्वाली और सूफ़ी परंपरा | **Qawwali Aur Sufi Parampara** |
| | |
| **संपादक** | Edited By |
| डॉ. मनीष कुमार मिश्रा | **Dr. Manish Kumar Mishra** |
| डॉ. उषा आलोक दुबे | **Dr. Usha Alok Dubey** |
| | |
| प्रकाशक | Publisher |
| **आर.के. पब्लिकेशन** | **R. K. Publication** |
| 1/12, पारस दुबे सोसायटी, | 1/12, Paras Dubey Society, |
| ओवरी पाढ़ा, एस.वी.रोड, | Ovari Pada, S. V. Road, |
| दहिसर (पूर्व), | Dahisar-East, |
| मुम्बई - 400068 | Mumbai - 400068 |

Phone : 9022 521190 / 9821251190
E-mail : publicationrk@gmail.com
Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : राजेन्द्र मिश्र
virar.mishra63@gmail.com

आवरण : अनिरूद्ध शर्मा

मुद्रक : सुमन ग्राफिक्स, मुम्बई - 400011

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

# अनुक्रम


1. भारतीय उपमहाद्वीप में सूफ़ी मत
   - डॉ. सत्यवती चौबे 07

2. हिन्दी की सूफ़ी-काव्य धारा पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव
   - अक्षय भास्कर वाजपेयी 14

3. मध्यकाल और सूफ़ी संत
   - अंबेकर वसीम फातेमा अब्दुल अजीज 19

4. सूफ़ी मत और भारतीयता
   - अनन्त द्विवेदी 27

5. हिन्दी साहित्य का मध्ययुग और सूफ़ीकाव्य
   - डॉ. अनिला मिश्रा 33

6. हिन्दी साहित्य में सूफ़ी-काव्य परंपरा
   - डॉ. मिर्जा अनीस बेग-रज्जाक बेग 38

7. सूफ़ी संत जायसी के पद्मावत में प्रकृति का सौन्दर्य
   - डॉ. मिथिलेश शर्मा 44

8. भारत में सूफ़ी दर्शन
   - डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे 50

9. सूफ़ी परम्परा का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव
   - डॉ. राहुल उठवाल 58

10. सूफ़ी कवि जायसी
   - डॉ. राम शंकर 67



Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

11. सूफ़ियों पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव
- डॉ. संदीप बलवंत देवरे 73

12. भक्तिकाल और सूफ़ी 78
- आकांक्षा सक्सेना

13. क़व्वाली और क़व्वालों की वर्तमान स्थिति
- डॉ. सिम्मी चौहान 83

14. सूफ़ी परंपरा में स्त्रियां
- डॉ. सुषमा देवी 92

15. भारत में सूफ़ीवाद की परंपरा और हिंदी साहित्य
- डॉ. वंदना 98

16. तेरी महफिल में किस्मत आजमा
के हम भी देखेंगे...
- डॉ. प्रवीण कुमार न. चौगुले 102

17. जन-साधारण में सूफ़ी मत की
लोकप्रियता : एक विश्लेषण
- डॉ. रीना थॉमस 109

18. सूफ़ीमत एवं उसका
भारतीय संस्कृति पर प्रभाव
- डॉ. विजय गणेशराव वाघ 113

19. पुरातन पंजाब के सूफ़ी कवि बुल्ले शाह
- ज्योति शर्मा 118

20. सूफ़ी और भक्तिकाल
- कात्यायनी कुमारी 128

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

21. सूफ़ी संतों का भारतीय संगीत में योगदान
- कृतिका पाण्डेय 135

22. क़व्वाली संगीत की शास्त्रीय परम्परा
- डॉ. महात्मा श्रीनाथ पाण्डेय 139

23. भक्ति-साहित्य और सूफ़ी
- प्रियंका कुमारी 143

24. भारतीय उपमहाद्वीप में सूफ़ी संगीत
- राघवेन्द्र कुमार पाण्डेय 149

25. सूफ़ी काव्य और लोक पंरपरा का स्वरूप
- रेखा कुमारी 155

26. सूफ़ियों पर भारतीय दर्शन का प्रभाव
- संगीता कुमारी 161

27. क़व्वाली और सूफ़ी परंपरा
- प्रा. संजय नारायण पाटील 167

28. सूफ़ी मत और क़व्वाली
- डॉ. संजीव कुमार श्रीवास्तव 176

29. सूफ़ी परंपरा में स्त्रियां
- सर्वेश यादव 191

30. सूफ़ी दर्शन एक अध्ययन
- शेख अजमुद्दीन जैनोद्दीन 195

31. सूफ़ियों पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव
- श्रीनिवास त्यागी 202



Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

32. भक्तिकाल और सूफ़ीज़्म
- तेज प्रताप टंडन 206

33. सूफ़ी संगीत एवं उसमें प्रचलित गायन विधायें
- डॉ. वेणु वनिता 212

34. सूफ़ी साहित्य में स्त्री छवि
- डॉ. विभा ठाकुर 220

35. पद्मावत महाकाव्य में जायसी का प्रेम चित्रण
- विक्रम बालकृष्ण वारंग 228

36. भारतीय उपमहाद्वीप में क़व्वाली और तकनीकी परिप्रेक्ष्य
- डॉ. मनीष कुमार मिश्रा
- डॉ. उषा आलोक दुबे 234

37. क़व्वाली और सूफ़ी परंपरा 247

38. Sufi Music in Bollywood :
An overview for the 21st century
- Divyajit
- Dr. Manish K. Jaisal 255

39. Allusions to Sufism in Tariq Ali's Works
- Dr. Neeta Chakravarty 265

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

# सूफ़ी संत जायसी के पद्मावत में प्रकृति का सौन्दर्य

- डॉ. मिथिलेश शर्मा

हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग भक्ति काल को कहा जाता है आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार भक्तिकाल का उदय संवत् 1375 से 1700 विक्रमी तक के कालखंड को माना जाता है। इस समय को स्वर्ण युग या स्वर्णकाल कहने के पीछे कुछ एक बड़ा कारण है- सदियों से चली आ रही दास्तां को तोड़ने के लिए इस युग में महान कवि और समाज सुधारकों का प्रादुर्भाव हुआ रामानंद, रामानुज, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य शंकराचार्य जैसे आचार्यों और कवि सूर, तुलसी, जायसी, मीरा, दादू, रैदास, तुकाराम, रसखान और रहीम जैसे कवियों ने मानवतावाद का बिगुल बजाया था।

हिंदी साहित्य के भक्ति काल में भक्ति की दो धाराएं सगुण निर्गुण प्रभावित हुई सगुण धारा के अंतर्गत राम कथा कृष्ण भक्ति शाखाएं आती हैं और निर्गुण के अंतर्गत संतों तथा सूफियों का काव्य आता है निर्गुण धारा के कवि ईश्वर को निर्गुण निराकार और अजन्मा मानते हैं। सूफ़ी काव्य में प्रेमतत्व की प्रधानता परिलक्षित होती है किन्तु सूफ़ी साहित्य में उपलब्ध प्रेम भावना भारतीय प्रेम से कुछ। अलग है। इस प्रेम भावना में स्वच्छता, सौन्दर्य भावना, साहसपूर्ण क्रियाकलाप विद्यमान रहते हैं तथा यह मर्यादावादी दाम्पत्य प्रेम से हटकर है। भारत में सूफ़ी मत का आगमन 9वीं-10वीं शताब्दी में ही हो गया था, किन्तु इसके प्रचार-प्रसार का श्रेय ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती को है, जिन्होंने इसे लोकप्रिय बनाया। सूफ़ी साहित्य में प्रेम महत्त्वपूर्ण होने के कारण सौन्दर्य और सौन्दर्य के कारण प्रकृति महत्वपूर्ण हो जाती है। वैसे भी आदिकाल से ही मानव का संबंध प्रकृति से रहा है। अपने मन को आल्हादित करने के लिए मानव चिरकाल से प्रकृति के विविध रूपों और दृश्यों का सहारा लेता रहा है। सूफ़ी काव्य में भी प्रेम की उत्तम व्यंजना के लिए सूफ़ी कवियों ने प्रकृति का अतिशयोक्तिपूर्ण सहारा लिया जिसके फलस्वरूप पूरा सूफ़ी साहित्य

Certified as
TRUE COPY



Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

प्रकृति के नाना प्रकार के उपमानों से समृद्ध है। जिसका जिक्र मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत के माध्यम से किया जाएगा।

प्रकृति सदैव से ही मानव जीवन का अभिन्न अंग रही है इसीलिए प्रकृति का साहित्य में एक अलग स्थान है। प्रकृति मानव जीवन के सुख-दुख में बराबर की भागीदार है जब मनुष्य हँसा तो प्रकृति भी उसके साथ हंसी है और जब वह रोया है तो प्रकृति भी उसके साथ रोई है। प्रकृति की सहानुभूति का मनुष्य सदैव ऋणी रहा है। शास्त्रीय दृष्टि से प्रकृति का चित्रण आलंबन अथवा उद्दीपन रूप में किया जाता है।

जायसी का पद्मावत प्रकृति चित्रण की दृष्टि से एक रमणीक रचना है उसमें प्रकृति का उल्लेख विविध रूपों में हुआ है जैसे- उद्दीपन के रूप में, अलंकार योजना के लिए, वातावरण के सृजनार्थ, मानवीय भावनाओं की व्यंजना के लिए आदि।

**उद्दीपन रूप में प्रकृति चित्रण-**

उद्दीपन का अर्थ है वह तत्व जो रस को उद्दीप्त करता है, उसकी आस्वादन क्षमता में अभिवृद्धि करता है, उद्दीपन कहलाता है। उदाहरण के लिए- शृंगार के संदर्भ में- निर्जन स्थान, नदी का एकांत किनारा, चांदनी रात सुगंधित पवन का बहना एवं मादक पदार्थों का सेवन आदि प्रेमी प्रेमिका के प्रेम को अधिक उद्दीप्त करते हैं। जायसी ने पद्मावत में शृंगार रस की दोनों अवस्थाओं (संयोग और वियोग) को बखूबी दर्शाया है। जायसी ने पद्मावती और रत्नसेन के उद्दीपन में 'षटऋतु' जो संयोग की अवस्था का दर्शाता है, उसका उपयोग किया है और नागमति और रत्नसेन के विरह में 'बारहमासा' का नियोजन किया है। षटऋतु और बारहमासा दोनों का समय एक ही बतलाया गया है। अंतर यह है कि रत्नसेन रूपी तंत्र नागमति से टूटकर पद्मावती से जुड़ जाता है। एक और करुण क्रंदन है तो दूसरी ओर हर्षोल्लास। उदहरणार्थ –

*"प्रथम वसंत नवल ऋतु आई। सुऋतु चैत बैसाख सोहाई।*
*चंदन चीर पहिरि धनि अंगा। सुंदर दीन्ह बिहरि भरि भंगा।*
*कुसुम हार और परिमल बासू । मलियागिरि छिरिका कविलासू।*

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

*सौर सुपेती फूलन्ह डासी । धनि औ कंत मिले सुखवासी।''*

नागमति रत्नसेन के समीप ना होने पर वसंतऋतु में भी विरह की आग में तिल-तिल जलती हुई कैसे अपना समय काटती है? जायसी के शब्दों में-

*''चैत बसंता होई धमारी। मोहिं लेखे संसार उजारी।*
*पंचम विरह पंच सर मारै। रकत रोइ सगरौ बन ढारै।*
*बूढि उठे सब तरिवर पाता। भीज मंजीठ टेसू वननाता।*
*मोरैं ऑब फरैं अब लागे। अबहुँ संवरि घर आउ सभागे।*
*सहस भाव फूली वनफती। मधुकर फिरे संवरि मालती।''*

**अलंकार की दृष्टि से-**

जायसी प्रेम के कवि हैं, एक ओर उन्होंने जहाँ अलंकारों से पद्मावत के काव्य रूप को सजाने का पूरा प्रयास किया है वहीं दूसरी ओर विविध अलंकारों का प्रयोग कर पद्मावत में व्याप्त प्रकृति सुंदरी को भी सजाया है।

जायसी ने फारसी साहित्य में प्रयुक्त उपमानों के द्वारा भी प्रकृति के सभी रमणीय रूपों को चित्रित किया है और अलौकिक सौंदर्य की अभिव्यक्ति हेतु भी विविध उपमानों का प्रयोग किया है। जायसी का एक उद्धरण-

*''कंचन रेख कसौटी कसी। जनु घन महं दामिनी परगसी''।।*
*''फूल दुपहरी जानौ सता। फूल झरहिं ज्यों-ज्यों कहवाता''।।*

उत्प्रेक्षा का एक और सुंदर उदाहरण जहाँ पद्मावती अपनी सहेलियों के साथ किस प्रकार सुशोभित हो रही हैं-

*''जनहुँ कंबल संग फूली कूई। जनहुँ चांद संग तरई ऊई''।।*

प्रस्तुत के लिए दो अप्रस्तुत की कल्पना करना यह जायसी की अपनी कला है।

मानव संवेदना में प्रकृति का साथ मानव के साथ किस प्रकार जुड़ा रहता है, इसका उदाहरण द्रष्टव्य है-

*''काह हंसौ तो तुम मोसौ किएउ सो नेह,*



Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

*तुम मुख चमकै बिजुरी मोई मुख बरसै मेघ"।*

इस प्रकार जायसी ने एक और बिजली का चमकना, मेघ का बरसना में मानवीय भावों को सहज रूप में प्रस्तुत किया है। साथ ही, अपने पद्मावत में विविध अलंकारों के माध्यम से प्रकृति के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत किया है। जैसे- नागमति के विरह की अभिव्यक्ति करते हुए कवि कहता है-

*"पिय सों कहेहु संदेशा ऐ भंवरा ऐ काग।*
*सौ धनि बिरहै जरि गई तेहिक धुआं हम लाग"।।*

इसी प्रकार उपमा रूपक अन्योक्ति आदि अलंकारों के माध्यम से जायसी ने अप्रस्तुत विधान की प्रक्रिया में प्रकृति की विविध सुंदर छवियों को दर्शाया है।

**वातावरण के सृजनार्थ प्रकृति-चित्रण-**

जायसी ने पद्मावत में प्रकृति का वर्णन करते हुए अनेक रमणीय स्थलों की अनुभूति कराई है। जैसे- एक और सिंहल द्वीप की प्राकृतिक सौंदर्य की छटा का वैशिष्ट है तो दूसरी ओर वहीं सिंघल के वैभव को पृष्ठ भूमि बनाकर भी प्रस्तुत किया है। उदाहरण-

*"तरिवर सबै मलै गिर लाए। भै जग छांह रैनि होइ धाये।*
*मलै समीर सोहाई छांहा। जेट जाड़ लगै तेहि माहां ।*
*ओहि छॉह रैनि होइ आवै। हरिअर सवै अकास दिखावै ।*
*पंथिक जो पहुँचै सहि घामू। दुख बिसरै सुख होइ बिसरामू।*
*जिन्ह वह पाई छॉह अनूपा। बहुरि न आइ सही यह धूपा।*
*अस अंबराउं सघन घन, बरनि न पारौ अंत।*
*फूलै फरै छहूँ रितु, जानहुँ सदा बसंत।*

इस उदाहरण में जायसी ने प्रकृति का वर्णन आलंबन रूप में किया है प्रकृति के इस चित्र में उसकी स्वतंत्र सत्ता के भी दर्शन होते हैं। सिंहल के वैभव चित्रण के संदर्भ में प्रस्तुत प्राकृतिक शोभा कैनवास का काम करती है। सिंघल के चारों ओर अमराइयाँ हैं, शीतलमंद सुगंधित पवन

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

से संपूर्ण वायुमंडल ओत-प्रोत है। वातावरण में इतनी शीतलता है कि जेठ की भरी गर्मी में भी ठंड महसूस हो। हरियाली ऐसी कि उससे गगन मंडल भी हरा-भरा प्रतीत हो और वसंत ने छहों ऋतुओं को जैसे अपने में समेट लिया हो। प्रकृति की छवि को अधिक सहज और साकार करने के उद्देश्य से जायसी अमराइयों का वर्णन करते-करते कटहल, बड़हल, खिरनी, जामुन, महुआ आदि की भी परिगणना कर डालते हैं।

**उपदेशिका के रूप में भी प्रकृति की शोभा दर्शनीय है**

जब मानव जीवन में अस्थिरता आ जाती है तो प्रकृति प्रेरणा के साथ नीति सिखाकर उपदेश भी देती है। जैसे-

*"पीव-पीव कर लाग पपीहा। तुही-तुही कर गडुरी जीहा।*
*और मुहमद बाजी पेम कै, ज्यौ भावै त्यों खेस।*
*तिल फूलहिं के संग ज्यों, होय फुलायल तेल"।।*

**मानवीय भावों की व्यंजना के लिए प्रकृति चित्रण-**

जब कोई भी साहित्यकार मानवीय भावों की तीव्रतम अभिव्यंजना करना चाहता है और उसे लगता है कि पूर्व प्रयुक्त उपमान उसकी अनुभूति को व्यक्त करने में असमर्थ है तो वह ऐसी अवस्था में यदि बात आलंबनगत है तो अन्वय का प्रयोग करता है। यदि विषय भागवत है तो वह उत्प्रेक्षा अथवा मानवीयकरण का प्रयोग करता है। जायसी ने अपने काव्य में आलंबनगत और मानवीयकरण दोनों ही रूपों को अपनाया है।

पद्मावत का नागमति वियोग वर्णन अपने आप में अनूठा है नागमति विरह की आग में जलकर अपनी सुध-बुध खो बैठती है। विरह की विभिन्न अवस्थाएं लगातार उसे संतप्त करती रहती हैं। भारतीय समाज की तमाम मर्यादाओं को निभाते हुए पतिव्रता नागमति जीवन जीने के लिए विवश है। जायसी के अनुसार प्रकृति को नागमति के प्रति पूरी सहानुभूति और संवेदना है। कई बार ऐसा आभास होता है कि मानो प्रकृति स्वयं नागमति के साथ उसके विरह में विरही बनकर रागात्मक संबंध स्थापित कर रही हो। जैसे-

*"सियरि अगिनि बिरहिनि हिय जारा। सुलगि -सुलगि दग्धै भै छारा।*
*यह दुखदग्ध न जाने कतू। जोबन जरम करै भसमंतू"।*

Certified as
TRUE COPY



Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086,

वियोग की अग्नि में कितनी विदग्धकारिणी शक्ति है कि यौवन को जलाकर भस्म कर देती है इतना ही नहीं, भौरे और कौवे जैसे पक्षियों की काले रंग में अनुरंजित होने की कल्पना विशेषतया लक्षणीय है। प्रकृति के उपकरणों और मानव सुलभ भावों का तादात्म्य कवि की विलक्षण शक्ति का परिचायक है। नागमति की व्यथा का कवि ने कुछ ऐसा ही वर्णन किया है- चर-अचर, जड़ चेतन, सभी उस व्यथा की अनुभूति करने के लिए मानो विवश हैं।

रत्नसेन और पद्मावती के संयोग के कारण शीत रूपी इंद्र शिकायत करता है कि पद्मावती ने उसे देश निकाला दे दिया है कालांश में वह सदैव पद्मावती के साहचर्य में रहता था लेकिन अब उसे पद्मावती का दर्शन भी दुर्लभ हो गया है। शीत के इस मानवीय रूप की परिकल्पना अपने आप में बेजोड़ है। जैसे-

*"जहं धनि पुरुष सीउ नहिं लागा। जानहुँ काग देखि सर भागा।*
*जाइ इंद्र सौ कीन्ह पुकारा। हों पद्मावति देश निसारा"।*

इस प्रकार जायसी द्वारा रचित प्रकृति चित्रण में नीति उपदेश तथा रहस्यवाद और आध्यात्मिकता के भी दर्शन होते हैं। किसी भी वस्तु या प्रसंग का विस्तार से वर्णन करना जायसी की मुख्य प्रवृत्ति है इसलिए उनके काव्य में पकवान, फूलों, फलों, घोड़ो, उत्सवों आदि का विस्तार से वर्णन मिलता है, सूफ़ी कवि मूल कथा के साथ साथ वस्तु, दृश्य एवं घटना का विवरण अतिशयोक्तिपूर्ण शैली में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। जायसी के पद्मावत में भी वन, वाटिका, समुद्र, पर्वत, नगर, पर्व, उत्सव, भोज्य सामग्री का वर्णन विविध प्रकार से किया गया है उन्होंने अपनी अद्भुत कल्पना शक्ति का परिचय देते हुए प्रकृति वर्णन के अन्तर्गत अपने ज्ञान का प्रदर्शन भी किया है।

**अध्यक्ष, हिन्दी विभाग**
रामनिरंजन झुनझुनवाला कॉलेज,
घाटकोपर (पश्चिम), मुंबई

❖❖❖

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.